International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org June- 2017, Volume-4, Issue-3 Email- editor@ijesrr.org

मेरठ जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययनत्र

अन्जू रानी
शोधार्थिनी
वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला

डॉ0 ऋतु भारद्वाज
शोध निर्देशिका
वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला

प्रस्तावना

शिक्षा विकास की प्रक्रिया है तथा पर्यावरण में आन्तरिक तथा वाह्य सम्पूर्ण परिस्थितियों को सम्मिलित किया जाता है जिनमें मनुष्य तथा अन्य जीवों की अभिवृत्ति तथा विकास को प्रभावित करती हैं। प्रत्येक जीव तथा प्राणी का अपना पर्यावरण होता है। मानव का पर्यावरण भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक होता है, शिक्षा द्वारा इनकी गुणवत्ता के लिए परिवर्तन तथा सुधार भी किया जाता है। जिससे बालकों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।

विश्व की आज एक बड़ी समस्या पर्यावरण को स्वच्छ और जीवनोपयोगी बनाने की है। अब यह आवश्यक हो गया है कि पर्यावरण के विभिन्न पक्षों एवं तथ्यों का अध्ययन किया जाये ताकि प्रौद्योगिक स्तर पर अति विकसित 'आर्थिक मानव' एवं पर्यावरण के बीच अन्तरक्रियाओं तथा पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण की प्रक्रियाओं को भली–भांति समझा जा सके, परिस्थितिकीय संसाधनों का समुचित मूल्यांकन किया जा सके, पर्यावरण के प्रभावों का सही आकलन हो सके, प्रदूषण के निवारण के लिए समुचित कार्यक्रम एवं रणनीतियाँ बनायी जा सकें तथा स्थानीय, प्रादेशित एवं विश्व स्तरों पर परिस्थितिकीय संतुलन एवं परिस्थितिक स्थिरता को बनाये रखने के लिए पर्यावरण नियोजन एवं प्रबंधन के कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया जा सके।

पर्यावरण चूंकि एक विस्तृत एवं व्यापक शब्द है। अतः शोधार्थी ने शोध समस्या के व्यापक स्वरूप को जानने के लिए **पर्यावरण अवबोध**, **पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता** एवं **शिक्षा के प्रति जागरूकता** का अध्ययन में सम्मिलित करना उचित समझा।

शोध उद्देश्य

शहरी एवं ग्रामीण शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध के स्तर का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

शहरी एवं ग्रामीण शिक्षा प्रणाली में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध में सार्थक अन्तर है।

शोध परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ जिले के ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 600 छात्र–छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण अवबोध मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त विधि

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग तथ्य संकलन हेतु किया गया है।

शिक्षा क्षेत्र व लिंगभेद के आधार पर विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध की तुलना–

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत बालक एवं बालिका विद्यार्थियों का पर्यावरण अवबोध के मापनी का प्राप्त अंकों के लिये मध्यमानों की गणना की गई जिसे सारणी 4.04 में प्रस्तुत किया गया है उसके लिये प्राप्त मध्यमानों का द्विमार्गी वितरण–

सारणी

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत बालक एवं बालिका विद्यार्थियों का पर्यावरण अवबोध के लिए प्राप्त मध्यमानों का द्विमार्गी वितरण

शिक्षा क्षेत्र	बालक	बालिका	कुल
शहरी	43.95	41.90	43.33
ग्रामीण	43.15	40.95	42.10
कुल	43.61	41.32	42.72

शिक्षा क्षेत्र एवं लिंगभेद के आधार पर विद्यार्थियों में पर्यावरण अवबोध की तुलना करने के लिए द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण विधि से प्राप्त परिणाम सारणी में प्रस्तुत है–

सारणी

पर्यावरण अवबोध चर के लिये द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण के परिणाम

स्त्रोत	स्वतंत्राश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य योग (MS)	एफ (F)	प्रायिकता (p)
शिक्षा क्षेत्र	1	0.76	0.76	4.16	0.05
लिंग भेद	1	4.52	4.52	24.77	0.05
अंतक्रिया	1	0.01	0.01	0.03	
त्रुटि	596		0.18		

सारणी 4.05 के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिगणित की गयी कुल तीनों एफ मानोंमें से दो एफ मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है जबकि शेष एक एफ मान किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इन तीनों एफ मानों की व्याख्या अग्रांकित प्रस्तुत है।

(क) शिक्षा क्षेत्र के लिय प्राप्त एफ का नाम 4.16 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है अतः इस आधार पर कह सकते हैं कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अवबोध में सार्थक अन्तर है।

(ख) लिंग भेद के लिये प्राप्त एफ का परिगणित मान 24.77 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इन सार्थक एफ मान के आधार पर कह सकते हैं कि बालक व बालिका विद्यार्थियों में पर्यावरण अवबोध में 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है।

सारणी 4.04 के अवलोकन से स्पष्ट है कि बालक के लिये मध्यमान 43.61 है जबकि बालिका वर्ग के लिए मध्यमान 41.32 प्राप्त हुए है अर्थात् बालिका विद्यार्थियों की तुलना में बालकों में पर्यावरण अवबोध अधिक है।

(ग) शिक्षा क्षेत्र व लिंग भेद की अन्तर्क्रिया के लिये प्राप्त एफ का मान 0.03 है जो किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में शिक्षा क्षेत्र एवं लिंग भेद में सार्थक अन्तर्क्रिया नहीं है।

सामाजिक क्षेत्र व अध्ययन वर्ग के आधार पर विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध की तुलना–

शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत विज्ञान व कला वर्ग के विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध मापनी पर प्राप्त अंकों के लिए मध्यमानों की गणना की गयी जिसे सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी

शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत विज्ञान व कला वर्ग के विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध के लिए मध्यमानों के द्विमार्गी वितरण–

शिक्षा क्षेत्र	विज्ञान	कला	कुल
ग्रामीण	46.51	41.86	43.33
शहरी	46.00	39.90	42.10
कुल	46.24	40.90	42.72

शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण प्रणाली में अध्ययनरत विज्ञान व कला वर्ग के विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध की तुलना करने के लिये द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण विधि का प्रयोग कर प्राप्त परिणाम का सारणी में प्रस्तुत किया गया है–

सारणी

पर्यावरण अवबोध चर के लिये द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण के परिणाम

स्त्रोत	स्वतंत्राश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य योग (MS)	एफ (F)	प्रायिकता (p)
शिक्षा क्षेत्र	1	1.52	1.52	10.47	0.01
लिंग भेद	1	28.84	28.84	198.37	0.01
अंतक्रिया	1	0.53	0.53	3.65	**NS**
त्रुटि	596		0.15		

सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि कुल तीनों एफ–मानों में से दो एफ मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है तथा शेष एक एफ–मान किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इन तीनों एफ–मानों की व्याख्या अग्रांकित प्रस्तुत है–

(क) शिक्षा क्षेत्र के लिए प्राप्त एफ मान 10.47 है जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पर्यावरण अवबोध में सार्थक अन्तर है।

(ख) अध्ययन वर्ग के लिये प्राप्त एफ का परिगणित मान 198.37 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इस सार्थक मान के अनुसार कहा जा सकता है कि विज्ञान व कला वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण अवबोध में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इस सार्थक मान के अनुसार कहा जा सकता है कि विज्ञान व कला वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण अवबोध में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर है। सारणी 4.06 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के लिये मध्यमान 46.24 है जबकि कला वर्ग के लिए मध्यमान 40.90 प्राप्त हुए है अर्थात् कला वर्ग की तुलना में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में पर्यावरण अवबोध अधिक है।

(ग) शिक्षा क्षेत्र व अध्ययन वर्ग की अन्तर्क्रिया प्राप्त एफ–मान 3.65 है जो किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में शिक्षा क्षेत्र एवं अध्ययन वर्ग में सार्थक अन्तर्क्रिया नहीं है।

लिंगभेद पर के लिए प्राप्त सार्थक एफ–मान के परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि पर्यावरण सम्बन्धी विभिन्न पक्षों के विषय में जानकारी के आधार पर बालिका व बालक विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर है। पर्यावरण के विभिन्न पक्षों को विषय में जितनी जानकारी बालिकाओं को है उसमें अधिक जानकारी माध्यमिक स्तर पर बालक विद्यार्थी को है। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि बालिका व बालक विद्यार्थी में पर्यावरण अवबोध सम्बन्धी तथ्यों पर सार्थक अन्तर है।

बालक के लिये मध्यमान 43.61 है जबकि बालिका वर्ग के लिए मध्यमान 41.32 प्राप्त हुए है अर्थात् बालिका विद्यार्थियों की तुलना में बालकों में पर्यावरण अवबोध अधिक है।

अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं लैंगिक भेद में सार्थक अन्तःक्रिया नहीं है। अतः परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँची कि प्राथमिक स्तर से ही पर्यावरणीय अभिवृत्ति को मजबूत किया जाना चाहिए और इसे करने के लिए प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा व प्रशिक्षण की आवश्यकता को समझाना चाहिए।

बालिका–बालक सभी विद्यार्थियों में पर्यावरणीय अवबोध को बढ़ाने के लिए वनों के संरक्षण हेतु जानकारी उपलब्ध करायी जाए तथा पेड़–पौधों को लगाने के लिए प्रेरित किया जाय। इसके लिए विभिन्न स्कूल कालेज में पर्यावरणीय प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, एस.सी. (1981), लर्निंग स्टाइल : ए न्यू एरिया एट रिसर्च, जर्नल आफ *एजूकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेन्सन,* 172–177।
2. कायस्थ, एस.एल. व कुम्रा, बी.के. (1986), *एन्वायरनमेन्टल स्टडीज,* वाराणसी : फन्डामेन्टल प्राब्लम्स एण्ड मैनेजमेन्ट।
3. कथूरिया, पी.ओ. (1989), *पर्यावरण क्रियाकलापों में शिक्षा का योगदान,* अहमदाबाद : नेहरू विकास प्रतिष्ठान प्रकाशन।
4. कपूर, सन्दीप (1996), पयावरण और युवाओं की भूमिका, कुरूक्षेत्र, 41 (7), 41–42।
5. गीतामाला (2007), परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. व विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल ऑफ एजूकेशनल स्टडीज (5), 56।